• पूजा-पाठ...

भगवान की सेवा के नियम

हिंदू धर्म में भगवान की पूजा केवल मंत्र, आरती और भोग तक सीमित नहीं मानी जाती, बल्कि इसमें प्रेम, समर्पण और सेवा भाव को भी विशेष महत्व दिया गया है। कई मंदिरों और घरों में भगवान की सेवा बाल स्वरूप या परिवार के सदस्य की तरह की जाती है। यही वजह है कि मौसम बदलने के साथ उनकी सेवा में भी बदलाव देखने को मिलते हैं। गर्मी के मौसम में जहां भगवान को हल्के वस्त्र पहनाए जाते हैं, वहीं सर्दियों में ऊनी कपड़े, शॉल, मखमली पोशाक और रजाई का इस्तेमाल किया जाता है। कई मंदिरों में ठंड बढ़ने पर स्नान के लिए गुनगुने पानी का प्रयोग किया जाता है और भगवान के भोग में भी मौसमी बदलाव किए जाते हैं।

भगवान की सेवा में वस्त्रों का विशेष महत्व होता है। जिस तरह ठंड के मौसम में इंसान गर्म कपड़े पहनता है, उसी तरह भक्त भगवान को भी ठंड से बचाने के भाव से ऊनी वस्त्र पहनाते हैं। कई मंदिरों में भगवान के लिए खास सर्दियों की पोशाक तैयार की जाती है, जिसमें स्वेटर, ऊनी कुर्ते, शॉल, मखमली वस्त्र, टोपी और रजाई तक शामिल होती हैं। खासतौर पर भगवान श्रीकृष्ण और भगवान राम के बाल स्वरूप की पूजा करने वाले मंदिरों में इस परंपरा को बड़े प्रेम से निभाया जाता है। भगवान को सुबह और शाम अलग-अलग वस्त्र पहनाए जा सकते हैं। रात में शयन के समय उन्हें गर्म कपड़े और रजाई ओढ़ाई जाती है। कई मंदिरों में मौसम के अनुसार भगवान के वस्त्रों का रंग, कपड़ा और शृंगार भी बदल दिया जाता है. इस परंपरा के पीछे भक्तों की भावना होती है कि जिस तरह वे अपने बच्चों और परिवार के सदस्यों को ठंड से बचाते हैं, उसी तरह भगवान की सेवा में भी कोई कमी न रखें।

ठंड बढ़ने पर भगवान के स्नान की व्यवस्था में भी बदलाव किया जाता है। कई मंदिरों में शीत ऋतु के दौरान भगवान को ठंडे पानी की जगह गुनगुने पानी से स्नान कराने की परंपरा निभाई जाती है। कुछ मंदिरों में स्नान के बाद भगवान को तुरंत गर्म वस्त्र पहनाए जाते हैं, ताकि उनकी सेवा में मौसम का ध्यान रखा जा सके। घर में स्थापित भगवान की मूर्तियों की सेवा करने वाले भक्त भी सर्दियों में स्नान और साफ-सफाई के दौरान मौसम का ध्यान रखते हैं. कई लोग ठंडे पानी से स्नान कराने के बजाय गुनगुने जल का इस्तेमाल करते हैं और स्नान के बाद भगवान को गर्म वस्त्र पहनाते हैं।

मौसम के अनुसार भगवान को भोग लगाने की परंपरा भी काफी पुरानी है. सर्दियों में कई मंदिरों में ऐसे खाद्य पदार्थों का भोग लगाया जाता है, जिन्हें पारंपरिक रूप से गर्म तासीर वाला माना जाता है।

• भगवान विष्णु...

मार्गशीर्ष महीने में पांचजन्य शंख की पूजा

हिंदू धर्म में शंख को पूजा-पाठ और धार्मिक अनुष्ठानों का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। शंख की ध्वनि को शुभता, सकारात्मकता और मंगल का प्रतीक माना गया है। भगवान विष्णु और श्रीकृष्ण के हाथों में विराजमान शंख का विशेष धार्मिक महत्व है। भगवान श्रीकृष्ण के दिव्य शंख को पांचजन्य कहा जाता है। मान्यता है कि मार्गशीर्ष महीने में शंख की पूजा करने से भगवान विष्णु और श्रीकृष्ण की विशेष कृपा प्राप्त होती है। यही वजह है कि इस महीने शंख को पांचजन्य का स्वरूप मानकर उसकी पूजा करने की परंपरा बताई गई है।

▶▶ मार्गशीर्ष महीने में क्यों होती है पांचजन्य शंख की पूजा?

मार्गशीर्ष मास को हिंदू धर्म में बहुत ही पवित्र माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में मार्गशीर्ष महीने को अपनी विभूतियों में शामिल करते हुए कहा है, 'मासानां मार्गशीर्षोऽहम्', अर्थात महीनों में मैं मार्गशीर्ष हूं। इसी वजह से इस महीने भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना का विशेष महत्व बताया गया है। मान्यता है कि मार्गशीर्ष महीने में किसी भी शुद्ध शंख को भगवान श्रीकृष्ण के दिव्य पांचजन्य शंख का स्वरूप मानकर पूजा करने से विशेष पुण्य प्राप्त होता है। भक्त इस महीने शंख को पवित्र जल से साफ करके उसकी पूजा करते हैं और भगवान विष्णु या श्रीकृष्ण के सामने उसे स्थापित करते हैं। ऐसा करने से घर में सुख-शांति बनी रहती है और भगवान की कृपा प्राप्त होती है।

▶▶ क्या है पांचजन्य शंख की कथा?

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान श्रीकृष्ण के शंख का नाम पांचजन्य था। धार्मिक कथाओं में बताया जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने अपने गुरु सांदीपनि के पुत्र को वापस लाने के लिए समुद्र में प्रवेश किया था। वहां उनका सामना पांचजन नाम के दैत्य से हुआ, जो शंख के रूप में रहता था। भगवान श्रीकृष्ण ने उसका वध किया और उसके शरीर से शंख प्राप्त किया। बाद में भगवान श्रीकृष्ण ने इस शंख को धारण किया, जिसे पांचजन्य नाम से जाना गया। महाभारत के युद्ध में भी भगवान श्रीकृष्ण ने अपने पांचजन्य शंख का नाद किया था। शंख की ध्वनि को युद्ध के आरंभ, धर्म की स्थापना और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक माना जाता है।

▶▶ मार्गशीर्ष महीने में शंख में जल भरकर अभिषेक करने का महत्व

मार्गशीर्ष महीने में शंख पूजा के साथ उसमें जल भरकर भगवान विष्णु या श्रीकृष्ण का अभिषेक करना भी विशेष फलदायी माना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि इस महीने शुद्ध शंख को पांचजन्य का स्वरूप मानकर पूजा करने और उससे भगवान का अभिषेक करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। भक्त शंख में गंगाजल या स्वच्छ जल भरकर भगवान का अभिषेक करते हैं। इसके बाद शंख में बचे जल को घर के पूजा स्थल और अन्य स्थानों पर छिड़कने की परंपरा भी है।



उत्पन्ना एकादशी

ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक राशि का संबंध किसी न किसी ग्रह से माना जाता है। उत्पन्ना एकादशी पर भगवान विष्णु की पूजा के साथ राशि के अनुसार दान करना भी अच्छा माना जाता है।

मान्यता है कि इससे आर्थिक परेशानियों, पारिवारिक समस्याओं और पितरों से जुड़ी बाधाओं से मुक्ति की प्रार्थना की जा सकती है। आइए जानते हैं मेष से लेकर मीन राशि तक के जातकों को इस दिन किन चीजों का दान करना चाहिए...

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, उत्पन्ना एकादशी का संबंध भगवान विष्णु और एकादशी माता से है। माना जाता है कि इसी दिन भगवान विष्णु की शक्ति से एकादशी माता प्रकट हुई थीं। इसलिए इस दिन भगवान विष्णु की पूजा, व्रत और दान-पुण्य करने का विशेष महत्व बताया गया है। पंचांग के अनुसार, साल 2026 में उत्पन्ना एकादशी का व्रत 4 दिसंबर, शुक्रवार को रखा जाएगा। यह व्रत मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि को मनाया जाता है।

राशि के अनुसार दान का महत्व-ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक राशि का संबंध किसी न किसी ग्रह से माना जाता है। उत्पन्ना एकादशी पर भगवान विष्णु की पूजा के साथ राशि के अनुसार दान करना भी अच्छा माना जाता है। मान्यता है कि इससे आर्थिक परेशानियों, पारिवारिक समस्याओं और पितरों से जुड़ी बाधाओं से मुक्ति की प्रार्थना की जा सकती है। आइए जानते हैं मेष से लेकर मीन राशि तक के जातकों को इस दिन किन चीजों का दान करना चाहिए।

- मेष राशि का स्वामी मंगल ग्रह है। ज्योतिष में मंगल को साहस, ऊर्जा और पराक्रम का कारक माना जाता है। इस राशि के जातकों को उत्पन्ना एकादशी पर लाल मसूर की दाल, गुड़ और लाल वस्त्र का दान करना शुभ माना जाता है।
- वृषभ राशि के स्वामी शुक्र देव हैं। शुक्र को सुख-सुविधा, वैभव, प्रेम और भौतिक सुखों का कारक माना जाता है। इस राशि के जातकों के लिए उत्पन्ना एकादशी पर सफेद वस्त्र, चावल, दूध और चीनी का दान करना शुभ माना जाता है।
- मिथुन राशि का स्वामी बुध ग्रह है। बुध को बुद्धि, वाणी, शिक्षा और व्यापार से जोड़कर देखा जाता है. इस राशि के जातकों को उत्पन्ना एकादशी पर हरी मूंग की दाल, हरे वस्त्र, फल और विद्यार्थियों को पढ़ाई से जुड़ी सामग्री दान करनी चाहिए।
- कर्क राशि के स्वामी चंद्र देव हैं। चंद्रमा को मन, भावनाओं और मानसिक शांति का कारक माना जाता है। इस राशि के जातकों के लिए उत्पन्ना एकादशी पर चावल, दूध, सफेद वस्त्र और जरूरतमंदों को भोजन कराना शुभ माना जाता है।
- सिंह राशि के स्वामी सूर्य देव हैं। सूर्य को आत्मविश्वास, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा और नेतृत्व का कारक माना जाता है। इस राशि के जातकों को उत्पन्ना एकादशी पर गेहूं, गुड़, तांबे के बर्तन और लाल या नारंगी रंग के वस्त्रों का दान करना शुभ माना जाता है।
- कन्या राशि के स्वामी बुध ग्रह हैं। बुध को बुद्धि, तर्क, व्यापार और संवाद क्षमता से जोड़कर देखा जाता है। इस राशि के जातकों को उत्पन्ना एकादशी पर हरी मूंग की दाल, हरे फल, सब्जियां और शिक्षा से जुड़ी सामग्री का दान करना चाहिए।
- तुला राशि के स्वामी शुक्र देव हैं। शुक्र को भौतिक सुख, वैभव, प्रेम और आकर्षण का कारक माना जाता है। इस राशि के जातकों को उत्पन्ना एकादशी पर सफेद वस्त्र, चावल, चीनी और दूध से बनी खाद्य सामग्री का दान करना शुभ माना जाता है।
- वृश्चिक राशि के स्वामी मंगल ग्रह हैं। मंगल को साहस, पराक्रम और ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है। इस राशि के जातकों को उत्पन्ना एकादशी पर लाल मसूर की दाल, गुड़, लाल वस्त्र और जरूरतमंदों को भोजन का दान करना चाहिए।
- धनु राशि के स्वामी देवगुरु बृहस्पति हैं। गुरु को ज्ञान, धर्म, शिक्षा, भाग्य और आध्यात्मिकता का कारक माना जाता है। इस राशि के जातकों के लिए उत्पन्ना एकादशी पर पीले वस्त्र, चने की दाल, हल्दी, केला और धार्मिक पुस्तकों का दान करना शुभ माना जाता है।
- मकर राशि के स्वामी शनि देव हैं। शनि को कर्म, न्याय, मेहनत और अनुशासन का कारक माना जाता है। इस राशि के जातकों को उत्पन्ना एकादशी पर काले तिल, कंबल, काले या गहरे रंग के वस्त्र और जरूरतमंदों को भोजन का दान करना शुभ माना जाता है।
- कुंभ राशि के स्वामी शनि देव हैं। इस राशि के जातकों को उत्पन्ना एकादशी पर काले तिल, कंबल, जूते-चप्पल और जरूरतमंद लोगों को दैनिक उपयोग की वस्तुओं का दान करना शुभ माना जाता है।
- मीन राशि के स्वामी देवगुरु बृहस्पति हैं। गुरु को ज्ञान, धर्म, भाग्य और आध्यात्मिक उन्नति का कारक माना जाता है. इस राशि के जातकों के लिए उत्पन्ना एकादशी पर पीले वस्त्र, चने की दाल, हल्दी, केला और धार्मिक पुस्तकों का दान करना शुभ माना जाता है।

■ पं. नित्यानंद

• वास्तु...

पेंटिंग, मूर्तियां, घड़ियां



घर को सुंदर और आकर्षक बनाने के लिए लोग तरह-तरह की पेंटिंग, मूर्तियां, घड़ियां और सजावटी सामान खरीदते हैं। कई बार कुछ चीजें दिखने में बेहद खूबसूरत लगती हैं, लेकिन वास्तु शास्त्र में उन्हें घर के लिए शुभ नहीं माना जाता। युद्ध, हिंसा, बर्बादी और दुख दर्शाने वाली पेंटिंग घर में नहीं लगानी चाहिए। ऐसी तस्वीरों को तनाव और अशांति का प्रतीक माना जाता है। घर में बंद या खराब घड़ी रखना अच्छा नहीं माना जाता है। मान्यता है कि रुकी हुई घड़ी जीवन में ठहराव और कामकाज में रुकावट का प्रतीक होती है। इसी तरह पुराने साल का कैलेंडर भी दीवार पर टांगकर नहीं रखना चाहिए। घर में शीशे और कांच की सजावटी वस्तुओं का इस्तेमाल आम है। लेकिन टूटे हुए शीशे या दरार वाले कांच को वास्तु शास्त्र में अशुभ माना जाता है।

• खाली बर्तन...



घर के किचन में भी खाली बर्तन नहीं होना चाहिए। खासकर चूल्हे पर गलती से भी खाली बर्तन नहीं रखा होना चाहिए। चूल्हे पर रखा कोई भी खाली बर्तन बिल्कुल भी शुभ नहीं माना जाता है। वास्तु मान्यता है कि ये गलती करने से घर में धन-धान्य की कमी होने लगती है। किचन में खाली बर्तनों को हमेशा उलटा करके किसी एक जगह स्टोर करना चाहिए। घर के मंदिर में कोई भी बर्तन खाली नहीं होना चाहिए। कलश से लेकर भोग वाली कटोरी कभी भी खाली नहीं होनी चाहिए।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित